सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस विज्ञप्ति

बिहार की शैक्षिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है–राज्यपाल

संख्या– 135
04/02/2019

पटना, 04 फरवरी 2019

''बिहार की शैक्षिक विरासत अत्यन्त समृद्ध रही है। बिहार में नालन्दा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय रहे हैं, जहाँ पूरी दुनियाँ के लोग शोधपरक शिक्षा के उद्देश्य से आते थे। आज आवश्यकता है कि पुनः बिहार का शैक्षिक उत्थान कर इसकी गरिमा को पुनर्स्थापित किया जाये और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में यहाँ के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को शामिल करा पाने में सफलता हासिल की जाये।''–उक्त उद्गार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन के राजेन्द्र मंडप में पटना विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आज शुरू हुए ''बिहार में उच्च शिक्षा की रूपरेखा'' (Blueprint of Higher Education in Bihar) विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

सेमिनार को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के अनुरूप भारतीय नागरिकों को तैयार करने के लिए यह आवश्यक है कि विश्वविद्यालय अपनी जिम्मेवारियों को गंभीरतापूर्वक समझें। राज्यपाल ने कहा कि आज संसाधनों की कोई कमी नहीं है, जरूरत है सिर्फ पक्के इरादों के साथ लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने की।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों को 'नैक ग्रेडिंग' के लिए पूरी तैयारी करनी चाहिए। इसके रास्ते 'डीम्ड यूनिवर्सिटी' बनने की ओर भी बढ़ा जा सकता है। राज्यपाल ने कहा कि 'नैक प्रत्यायन' की तैयारी के लिए बिहार सरकार टोकन–राशि उपलब्ध करा रही है। पुस्तकालयों एवं प्रयोगशालाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए भी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को आर्थिक सहायता की जा रही है। सभी विश्वविद्यालयीय विभागों एवं कॉलेजों को शौचालयों और गर्ल्स कॉमन–रूम के निर्माण के लिए भी धन राशि उपलब्ध कराई गई है।

राज्यपाल ने कहा कि कुलपति विश्वविद्यालय–परिवार के पितातुल्य प्रतिपालक होते हैं। उन्हें अपना दायित्व बखूबी समझना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि कुलाधिपति के रूप में बेहतर और उत्कृष्ट कार्य करनेवाले कुलपतियों को सदैव मेरा संरक्षण मिलेगा। राज्यपाल ने कहा कि उनके कार्यकाल में पिछले दिनों उच्च शिक्षा के सुधार–प्रयासों को लेकर जो प्रयास हुए हैं, वे संतोषप्रद हैं परन्तु अब भी काफी लंबा सफर तय करना है।

राज्यपाल ने कहा कि आधुनिक जरूरतों के अनुरूप शिक्षकों को प्रशिक्षित किये जाने की जरूरत है, पाठ्यक्रम को भी आधुनिक बनाने की आवश्यकता है। राज्यपाल ने कहा कि आज उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं का उपयोग करते हुए अगर हम तैयार किये जानेवाले उच्च शिक्षा के 'रोड–मैप' के अनुरूप, ब्लूप्रिन्ट पर तेजी से चरणबद्ध रूप में आगे बढ़ते रहें तो बिहार राज्य की उच्च शिक्षा व्यवस्था विकसित राज्यों के अनुरूप हो जाएगी। उन्होंने कहा कि महर्षि सुश्रुत ने 'सर्जरी के जनक' के रूप में हमारी प्रतिष्ठा बढ़ायी है। अगर हम दृढ़निश्चय के साथ उच्च शिक्षा के विकास में तत्पर बने रहें तो हमारे गौरवशाली अतीत की भाँति ही हमारा वर्तमान भी वैभवपूर्ण हो जाएगा।

उद्घाटन–सत्र में बिहार के शिक्षा मंत्री श्री कृष्ण नन्दन प्रसाद वर्मा ने सतत विकास हेतु शिक्षा के महत्त्वपूर्ण योगदान की चर्चा की। उन्होंने शिक्षा को सामयिक एवं मूल्यपरक बनाने पर जोर दिया तथा उच्च शिक्षा में सरकार के प्रयास को आगे बढ़ाने में सहयोग हेतु सभी शिक्षण संस्थानों से आग्रह किया। शिक्षा मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, देशभक्ति एवं मानवाधिकार आदि के प्रति संकल्पित उत्कृष्ट नागरिक तैयार करना शिक्षा का परम उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावकों के समन्वित प्रयासों से शिक्षा का विकास संभव है। श्री वर्मा ने कहा कि आधारभूत संरचना विकास के साथ–साथ सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के जरिये भी उच्च शिक्षा को विकसित किया जा सकता है। उन्होंने

उच्च शिक्षा के विकास में महामहिम राज्यपाल के मार्ग–दर्शन और माननीय मुख्यमंत्री के सहयोग की भी सराहना की।

कार्यक्रम में बोलते हुए डॉ॰ आर॰सी॰ सोबती, राज्यपाल के शिक्षा परामर्शी ने अपने सम्बोधन में कहा कि शिक्षा को स्वावलंबी तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को वहन करने वाला होना चाहिए। उन्होंने उच्च शिक्षण संस्थानों एवं उद्योगों के बीच परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने की सलाह दी।

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय में कार्यरत संयुक्त सचिव डॉ॰ एन॰ सरवन कुमार ने उद्घाटन–सत्र को सम्बोधित करते हुए बिहार में सबों के लिए शिक्षा सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को NAAC मूल्यांकन हेतु आगे आने का आग्रह किया, ताकि वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मार्ग को प्रशस्त कर पायें।

कार्यक्रम में राज्यपाल के प्रधान सचिव ने इस सेमिनार के औचित्य पर प्रकाश डाला तथा बिहार के उच्च शिक्षा को जीवन्त, उत्साही तथा प्रभावोत्पादक बनाने पर जोर दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में शिक्षण–संस्थानों को पाठ्यक्रमेतर सांस्कृतिक एवं खेलकूद की गतिविधियों को भी समयानुसार संचालित करने की सलाह दी।

इस सम्मेलन में लगभग 400 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर उच्च शिक्षा से जुड़े बिहार के शिक्षाविद् बड़ी संख्या में मौजूद दिखे। कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रांतो से राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया है।

आज सम्मेलन के प्रथम दिन चार तकनीकी सत्र भी आयोजित किए गये जिसमें प्रथम सत्र में उच्च शिक्षा में डिजिटल पहल पर संयुक्त सचिव (भारत सरकार) डॉ॰ एन॰ सरवन कुमार तथा महाराष्ट्र नॉलेज कॉरपोरेशन के श्री अनुपम ने संबोधित किया।

'नैक' से जुड़े दूसरे तकनीकी सत्र को 'नैक' के चेयरमैन डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह चौहान ने संबोधित करते हुए कहा कि बिहार के विश्वविद्यालयों में 'नैक' की तैयारी के क्रम में 'नैक' से संबंधित कार्यशाला के आयोजन में उनकी संस्था भरपूर सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि भारत में 'नैक मूल्यांकन' की फ्रेमिंग अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है।

आज के तीसरे तकनीकी सत्र में अकादमिक एवं परीक्षा सुधार तथा उच्च शिक्षा में गुणवत्ता विकास विषय पर 'नैक बेंगलूरू' के डॉ॰ रमा कोडापल्ली तथा एन॰यू॰पी॰ई॰ के सलाहकार डॉ॰ के रामचन्द्रन ने भी अपने विचार व्यक्त किये। आज के चौथे और आखिरी तकनीकी सत्र में छात्र–गतिविधियों, सामाजिक उत्तरदायित्वों तथा पूर्ववर्त्ती छात्र एवं विश्वविद्यालय परिसंवाद विषय पर राजभवन के शैक्षिक परामर्शी डॉ॰ आर॰सी॰ सोबती ने विस्तार से चर्चा की।

सम्मेलन में कल दूसरे दिन भी कुल पाँच सत्रों के दौरान एन॰आई॰एफ॰, शिक्षक गुणवत्ता विकास, पुस्तकालय–सुविधा, पाठयक्रमेतर गतिविधियों तथा प्राइवेट विश्वविद्यालयों आदि से जुड़े मुद्दों पर भी विचार–विमर्श होगा तथा उच्च शिक्षा का 'ब्लूप्रिन्ट' तैयार करने के क्रम में सॉर्ट टर्म, मिडियम टर्म एवं लांग टर्म लक्ष्य निर्धारित करते हुए कार्यक्रम तैयार किये जायेंगे। कल के सत्रों में श्री आर॰के॰ महाजन अपर मुख्य सचिव शिक्षा, प्रो॰ श्याम मेनन, श्री गौरव सिंह, प्रो॰ डॉली सिन्हा प्रतिकुलपति, डॉ॰ राजकुमार, डॉ॰ अशोक कुमार झा आदि भी अपने विचार व्यक्त करेंगे। कार्यक्रम में स्वागत–भाषण पटना पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ रासबिहारी प्रसाद सिंह एवं धन्यवाद–ज्ञापन पटना विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ॰ डॉली सिन्हा ने किया।

....